

तुम गलत, मैं सही



आत्म चिंतन करते नहीं आत्म मेंशन करते नहीं फिर कहते तुम गलत मैं सही। सोचो प्राक्ख क्या रहा समर छोटा या महा अब हम कहें, तुम कहां बनानी थी छछ, कर दिया दही फिर कहते हो तुम गलत, मैं सही एक दिन मैं कोई किस्सा नहीं होता परंतु एक दिन किस्सा होता है समय पर संभल जाओ तो सही नहीं तो पाछे पछताना होता है बहनी थी भागीरथी, मटमैली नहीं बली। फिर कहते हो तुम गलत, मैं सही साथ सदा साथी नहीं सखी स्वार्थ में सब रिश्ते बंधे क्यों करते हो चुरे धंधे 'तेज' की बात को चुप मत मान बंद निर्मल कभी तेरी भावना न रही फिर कहते हो तुम गलत मैं सही तेजालाल पंवार जनशिक्षक कन्या उमावि बाकनर लुड़ी जीना है मेरा मन डूब रहा है अनजाने अंधकार में मेरी सारी कोशिशें मेरे सारे प्रयास बेकार हो रहे हैं। टूट रहा है बार-बार मनोबल। सांसारिक अघात अपनों का दया जब मिलता है बड़े-बड़े योद्धा धराशायी हो जाते हैं। लौकिक मुझे उन्नत है इस कठिन दौर से गुजरकर भावर निरकनन है। सीने का दर्द सीने में ही सलना है... मौन रहकर मुकाबला करना है अपने हलालों से मुझे जीना है भर-भर कर ही सही खुद को खुद ही समझाना है। - मुकेश कुमार श्रुति वर्मा फतेहाबाद, आगरा 96279 12535

तुनिया के हाथों में खंजर...

खंजर है... सब खंजर है जान ओ जिगर खंजर है नजर उठकर देख जरा दुनिया के हाथों में खंजर है... जिसके पर शीशे के हैं वो हम पर पथर फेंकते हैं आपस में खलकर हूट जलती आग में घट सकते हैं... एक से बढ़कर एक पर का , बाहर भी पड़ोस का नजर है... नजर उठकर देख जरा दुनिया के हाथों में खंजर है... यकत आ गया है नए अवतार ले जहाँ खंजर है चर्च तलवार ले देश से बहकर कोई समान नहीं देश के लिए स्वयं को समार ले... कई तुपान आगे कई सुनामी, फ़ोरोदी जिगर, ये तो समंदर है नजर उठकर देख जरा दुनिया के हाथों में खंजर है... जाला को संभाल कर रख अभी दुश्मनों को दिवाना बकने है अभी आंखों में हमलाने खोओ जवानों देश पर मर मिटना बकौ है अभी... जात बिगड़ बैठे हैं चारों तरफ से, धक्कने मत दे अभी जो अंदर है नजर उठकर देख जरा दुनिया के हाथों में खंजर है... मनोज शाह मानस नई दिल्ली 79825 10985

होती नही बातें

पर मैं होती नहीं - सदाब की बातें। पर मैं किचकिच होती है चउ सुहाब। कई लहरें - झाड़े हैं पर मैं चढ़ी कहल ? सुहाब से मया बडी - अलगया की बातें। अंगुली से बकते - ऊंची - ऊंची दीवारों। देहरियों से - अब दूर हूँ ये दूआ। पर बकने न मंग के - छिद्रकनय की बातें। आंगन का बूझ बगदर - अब झाड़ु हूँ। पर का बगीचा भी झड़ - अब उमड़ा हूँ। गमती भीमाम से - अलबब की बातें। कई दिन से घर के - साहस हूँ न जाले। पर से फरार हूँ - दीवों के उजाले। शहर में कहां बिया - अब गांव की बातें। अगोकर आनन पक्सी

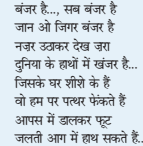
पूर्य पिता को नमन

इन्होंने मेरे हाथ हैं, पूर्य पिता को नमन है। इन्होंने अंगुली फकड़, हमें चलना बहना सिखाया, जिंदगी जीने का पाठ पढ़ाया, सल पाठ बाद चार खते हदाम हैं, पूर्य पिता को नमन है। इन्होंने हमें संभाल, हिममत बढ़ाई, 'नयन' कभी नहीं होने दिए नम हैं, पूर्य पिता को नमन है। हम आज जिस मुकाम पर हैं, उसे आज जिस मुकाम पर हैं, ये इनके आशीर्वाद का फल है, इनके साथ हमारे इशारे भी अटल हैं, पूर्य पिता को नमन है। हम करे प्रकृति से प्यार यही हमारी है पहचान पदावरण को रखा का सव रखें सदा ही ध्यान। डॉ संजुला सिंह 'संजु' जमशेदपुर

हैं बोल दो

आपने हृदय के सब राज अब खोल दो प्रेम करते हो मुझसे तो हैं बोल दो तुम हो संनेख, कोरी चुनर सी ही मैं जो तुम्हें भार, मुझमें वो रोा थोल दो मैं जो युग-युग से तेरी ही बहनकर रही इस प्रतीका का मुझको कोई भूलो दो मैं न तोड़ूँ उरकत को इस डेर को

अनपढ़ पीढ़ी



कहते हैं लोग अनपढ़ थी वो पीढ़ी, पर जीवन का ज्ञान अपार था। कितानों में जो डूब रहे हैं आज हम, उनके संस्कारों में वो संसार था। कदाही थी दायीं माँ 'भरि नल खोलो बेटा, पानी भी ईश्वर का बरदान है। हर बूँद में जीवन बसता है, इसका सम्मान हो सच्चा ज्ञान है। सुबाह-सुबाह तुलसी की जल देना, पीपल-बरादर का मान करना। चिड़ियों के लिए छत पे दाना रखना, धरती माँ का सम्मान करना। गाय के लिए छिंके बचा लेना, बेतुवानों का भी अभिभार था। अपने हिस्से की रोटी बाँट देना, यही मानवता का सच्चा साह था। वो पढ़ी-लिखी काम कलहाती थी, पर प्रकृति का पाठ पढ़ती थी। हर जीव में ईश्वर को देखना, ऐसी दृष्टि वो सिखाती थी। आज डिग्रियों के अंबर लगे हैं, पर संवेदनही कहीं खो गई। मोबाइल की चमक में अक्सर, चिड़ियों को चकक दब गई। वो पीढ़ी सच में अनपढ़ न थी, जीवन की गुरुकुल जानी थी। धरती, जल, वन, पशु-पक्षी की, वो सच्ची संरक्षक रानी थी। खंजर है... सब खंजर है... आज ओ जिगर खंजर है नजर उठकर देख जरा दुनिया के हाथों में खंजर है... नमोज शाह मानस नई दिल्ली 79825 10985

सितारों की महफिल तुम

सितारों की महफिल में तुम चांद नजर आती हो, जनत के नज्दों में, तुम हर नजर आती हो, गगन की नीलिमा हो तुम। धरा की हरीतमा प्रभात की लालिमा हो तुम। मन को लुभाती हो, धुंक्कन में दिल की हो तुम। नव्य की हलकत हो, तुम से ये जिन्दगी, तुम ही हो रुह-ए-तन। प्रफुल्ल त्रिवेदी, इंदौर, मध्य प्रदेश 9977866527

जून

कमबख्त तुम जिन हज्र का महीना भी है। और इस तरफ ये दिल कुछ कमीना भी है। अब तो सुफकत हो गए हैं इस जी के सवाल। इसक ही बस करना है या जीना भी है। किससे मसारा करें हम और कहीं जाएँ अल। एक तरफ कूचा-ए-जानों, उधर मदीना भी है। खुद ही अपनी बात बिगाड़े हैं हम उजलत हो। इसक का तीर है, तरीका भी, करीना भी है। आ गए हो तुम यहाँ तो एहतयाम इसका रहे। जिंदगी की जिंदगी की तरह जीना भी है। यूँ नुमाशा की बहू देगी परफानी-ए-दिल। वक़्त अब थोड़ा निकालो, जवमों को सीमा भी है। देखने को अपना 'अक्स', घर में एक आईना भी है। नितिन पुरोहित अक्स उज्जैन

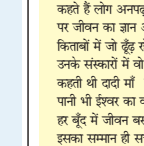
कठिन रास्ते

रास्ते कठिन थे पीव थक गए कई अपने बीच रह में छूट गए आँसुवाँ आई, तुमना भी आए पर मेरे सपने कभी न डूक पाए। कभी हर मिली, कभी आँसू मिले कभी अंधेरे में भी, चुपनु मिले हर बार दिने पर खुद को संभाला मैंने हर गर्द को हैसकर छिपाया मैंने। जब मॉडल के करीब पहुँचा मैं तो पीछे मुड़कर देखा मैंने सफरता से ज्यदा खूबसूरत तो वह सफर था जो तय किया मैंने। अंधेरे से तो बस इतना सीखा कि हर मानना कभी नहीं जो चलते रहे बस हिममत से उनकी कदम चूमती ये दुँडिया सारी। अनुपम भारती वेगुसराय, बिहार

गीत - गहरा सच

इक दिन आने का, एक दिन जाने का इससे गहरा नहीं कोई सच जमाने का नए का ही इक है, सक्कड़ पाने का खाली करना होगा, स्थान पुराने का सदा नहीं रह सकता रूप खजने का दौर बदलते ही, होगा शोर लुटाने का कुछ और था आकाश, झिलमिलाने का अब समय अलग, तारों को धुँधलाने का बासी हो गए फूल, नियम मुरखाने का उनवन की शीक है, प्रभात सजाने का कभी जीवन है दरक, काम इतारने का कभी खिलाड़ी बन, खेल में धरवाने का अतवार सिंह अक्षरजीवी जयपुर फोन 8209040729

समय चक्र, कविता



समय चक्र करवटेलेंले युग युग हो अवरति धर्म-कर्म शरणीमारे चौरवैर घटनायें वृं इतिहास कथाएँ। निर्मित 2हिन्दु अहिंस सत्य पत्थर और जियो जीने दो हित विद्यास परलौभ बसा नाम परिवर्तन जल छिद्र बहू हिनसा। विरवास 3 समय-समय परजने तपे चलती रसायनिको युक्त चले। शक्य निर्दोषी को लारो की नहीं गमती अज तंत्र लगे शरों डेर, सर्वत्र 5पर्याय में कुचती मावकता देखो जल जीवन कवैर विनास हनुमान सर जीवन करे किसको आतताहयो का हैड विरवास 6दोषी रहित महाभारत संग न अना। अथा नयन विवाद दुगीभय शकृति रहित ये जंग जंग हे मावावियों का बुद्ध विरवास महाकवि नं भी रा नागदा मय, 9424862669 निर्देशक निरदाला हिन्दी, साहित्य अकादेमी

बोली माई ओम नमः शिवाय

बोलो भाइ ओमः शिवाय। बोलो ब्याग गजब निराल, अंग भूपति रमाय, लाठी खा कर भोले बाबा, बैजनाथ कहलया। बोलो भाइ ओम..... बोलो ब्याग गजब निराल, गले सौप लपटाय, भगमासुर को बर दे कर के, संकट में फंस जाय। बोलो भाइ ओम..... बोलो ब्याग गजब निराल, भीम धरतु खाय, गंगा जी को भाग्य करके, गंगाधर कहलया। बोलो भाइ ओम..... बोलो ब्याग गजब निराल, तुलु प्रसन्न हो जाय, इंद्रीएर में भोले बाबा, आशुतोष कहलया। बोलो भाइ ओम..... अमृत सवने बाँट लिया, पर विष की कौन पचाय, विष पी कर के भोले नाथ जी, नीलकंठ कहलया। बोलो भाइ ओम..... सौख सम्पने निरत ब्रह्मेवर, शिव को शरीर नाया। करले जमन समकन नर अपनो, सतिपति के गुन गाय। बोलो भाइ ओम..... ब्रह्मेश्वर नाथ मिश्र आगरा, भोजपुर, बिहार

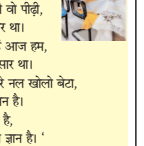
हम फिर मिलेंगे

इस जन्म बस तुम्हारी यादों के दिल में अगमिन्त प्रहर रहे, दूर रहे हलदम प्रेम के उजाले पाव आती रही हलसत दुर्गिय विहास वेदना और पतझड़ का, उस भर आँखों में संसह रहा इस जन्म मिला नहीं तुम्हारी चाहतों का दौर, तेरी यादों को हिरा चलता रहा चाहतों की पगडंडियों पर अनकरी थी लड़ुप मिलती रही आसुर जीवन के आँगन में, अपने खदे होई संभलें, जीवन के खालीपन को आँसुओं में झिलझिल करती रही मन की पीड़, फिर लोटेरी हम फिर मिलेंगे, बस यही एक आस लिए, सुनील गौर इंदौर मध्यप्रदेश

माँ

जब बचपन में मेरी माँ मुझे बहाव जाने से रोकेती थी मेरी गलती पर मुझे डांटती थी दोस्तों संग घूमने से मना करती थी उसे समय ऐसा लगता था वह बेवजह डांटती रहती है वह बेवजह पेशान होते रहती है आज जब मैं खुद माँ बन गई हूँ तो इस माँ को उस माँ की पेशानी समझ आ गई है अब सब कहानी समझ आ गई है अब अपनी बेटी को जब जब मैं समझाती हूँ मुझे अपनी माँ याद आती है उसका मुझे डांटने की वजह याद आती है माँ होने का महत्व समझ में आ गया है माँ होने का महत्व समझ में आ गया है डॉ शकौला कुमारी सहायक प्राध्यापिका बीपी मंडल अभियंत्रण महाविद्यालय मधेपुरा बिहार मो - 9304478448

आत्मबोध



मैं कल भी सफर में था, मैं आज भी सफर में हूँ। कल अपनों की तलाश में था, आज अपनी ही नजर में हूँ। कल तुनिया के नशे में था, आज होश-ओ-खवास में हूँ। कल भीड़ के पीछे चलता था, आज अपने ही सफर में हूँ। कल किस्मत को दोष दिया था, आज कर्मों के असर में हूँ। कल अहंता में खुद को डूँड, आज अपने ही अंतर में हूँ। कल मॉडर्न बाहर खोती थी, आज मन के नगर में हूँ। कल जग को जीतने निकला था, आज खुद को खबर में हूँ। ...दयापम साहू ग्राम-डौकाबांध (बंजारा) जिला-कबीरधाम (छत्तीसगढ़)

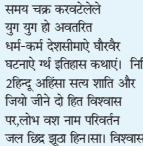
हैश और मद हैश

हैश में रहते हूँ भी मद हैश होने की तमना रहती है अब। बरतों से जो अच्छ बनना सीखा है लगाता है अब जरूरत होना है अच्छ बनने से ज्यादा सच्चा होने की। हैश हमस में रहते हूँ थोड़ा मद हैश हो जाना एक तरह से अपनी मददगारी का आम अवलोकन है। तो दूसरी तरफ मददगारी में रहते हूँ स्वयं के हैश हमस में रहना स्वयं के होने की सूझ अनुभूति है। क्या कर्म मुझसे दो रहे हैं इसका हैश है मुझे किंतु मैं कर रहा हूँ इसका मुझे हैश नहीं मैं मद हैश हूँ। महेश झाला उज्जैन 9425158274

शुणिकार

आरक्षण का कमाल है तब से जो रहा है उनका ही गुणगान यह अलग बात है आरक्षण के कोटे से वे मंत्री बने श्री मान रिश्तत को शक्य बनकर करते है जो कमाई उस शक्य से एक दिन वे मात खायेंगे भाई कमीशन इस देश में कई किस्म की मुर्गियाँ है श्री मान किस समय किस मुर्गी को करना होता हलत इसका रखा जात है पूरा-पूरा ध्यान जिस मुर्गी को भी करना होता है हलत उसका कमीशन पहले से ही तय कर लेते है दवाल कुशलता चुनाव के समय नेता अपनी कुशलता दिखाते हैं जब जीत जाते हैं तब आराम फरमाते है गले पड़ना रयचन्द्र हर क्षेत्र में आफको मिल जायेंगे आप से राय मांगी नहीं फिर भी देने हेतु गले पड़ जायेंगे रमेश मनोहरा शीतला माता गली जावर

सबसे लंबा जो दिवस, दिवस बनाया योग



लंबा जीवन हो सदा, ऐसा किया प्रयोग। 2.योग विषय को दिन है, भारत को पहचान। जीवन सुखी निरोग हो, प्राणायाम ख ख्यान। 3.खवास रोकना छोड़ना, बड़े पाप आराम। मिले तस्लली हृदय को, मन बहा आराम। 4.आधा घण्टा रोज यदि, योग करे इंसान। मन में धरे प्रफुल्लता, हर्षित तन का मान। 5.ज्यों ज्यों योग अनविद्य बढ़े,गता है अक्सर। जीवन में खुशियों भरें, मात्र खंबे ये याद। 6.योग गतिशील तत्व है, द्वैत अद्वैत पाय। मिलवने अद्वैत से, मार्ग यही से जाय। 7.शवास गति का संतुलन, मनबला आराम। इसी योग के अंग को, कदते प्राणायाम। 8.स्वस्थ रहे दुगुण रहित, मिले अंधिकरतम आयु। देह समनव्य योग से, हेती है दीर्घ्यु। प्राबोध मिश्र 'हितैवी' सेवा निवृत्त प्रचार्य, बडवानी ( म . प . ) 451-551

योग: बहती उम्र थमता दर्द

उम्र की बहती साँझ में नया स्वर्ग लाना है, योग की पावन शक्ति से, जीवन को स्वस्थ बनाना है। बुढ़ियाँ बनें चिंते पर ही, मन को नहीं धरने देना, हँसियों के हर एक दर्द को, अब हलकर विदा है कर देना। आनस से तन में स्फूर्ति आए, प्राणायाम से सारे माँके, बुढ़ापे की इस दहलीज पर, जीवन का हर कोना चमके। धरणा घटनों का जो दर्द, सुधरणा अब रत्न संकर, योग ही है वह लाठी जो, जीवन नया करती पर। उम्र की बहती ... तन को देता नम ऊर्जा, मन को देता शांति अपार, आत्मा को परमात्मा से कराता है ये साक्षात्कार। जहाँ योग का दीप जलना वह निर्गो योग जीवन, वहाँ हृदय में प्रेम खिलना, वहाँ रोगों सुख का साना। योग सिखाता है, संयम, सदाचार और आत्मदान, इसके पथ पर चलने वाला, पाता है जीवन का सम्मान। योग हमारी संस्कृति का, महत्व, गौरव, दिव्य विधान, जिससे जाना योग का अद्भुत उपाय योग जीवन ज्ञान। उम्र को बहती ... न हो निर्मिता किसी रोग, हम आरामिभर बने जायेंगे, बहती उम्र के हर एक पल को, उत्सव जैसा मनायेंगे। ध्यान से तन शांति रोगों दूर रोगों का सदा स्व, योग अपनाकर हर बुद्धवस्था पाएंगे एक का आशीर्वाद। स्वस्थ शरीर तो आना योग, देना मिले तो दूर हो रोग। योग और व्यायाम की निरंतरता, आरथ्य को करंगी दूर, शरीर में आरणी नई स्फूर्ति, बीमारी होगी कोसाँ दूर, यदि प्रशिक्षक का लोभे सहीगत, व्यस्तित होगे व्यायाम और योग। उम्र की बहती साँझ में नया स्वर्ग लाना है, योग की पावन शक्ति से, जीवन को स्वस्थ बनाना है। सक्तर- ई, सुदामा गौर, इंदौर ( मध्य प्रदेश)

ये ही लाता है

जब तलक उसका हिस्सा है तो तू पहाड़ है, वन खिलवाव लिए। हाथ में एक दाढ़ी भर में, छँव नहीं जब तलक तू देर से झाड़ है देर से ही सही सदा गलत से बचता फिरा, संभ-साथ ही बड़े-चुड़ों का बड़ी आड़ है तकाबल लाभ को हर कोई तैयार दिखता, जुगाड़ जकर हुआ या कमाल का जुगाड़ है नाम का भी पथर पर अंतर से मांग है, जब से वाले कले रहे सिंहरिण उजाड़ है उमर को ना बात कर हम उमर हो जाइए, उमर के आगे तबुयें की ये ही लाता है। इसका मुझे हैश नहीं मैं मद हैश हूँ। महेश झाला उज्जैन 9425158274

आवरण

कविताएँ महान शब्द नहीं, एक आवरण हैं, परिधान है वो, जो ओढ़ती लेखनी है, यह तो भावों का आचमन है, एक सम्पन्न है, इसे उखाड़ो मत, यह अंतर्मन की ध्वनि है। कलेबर लाकार पढ़ी इसे, बर विश्वास मानो, कवि के निजी जीवन का इसे गहल न जानो। उन्हें महसूस करो, जिन्होंने इसे महसूस है, तभी तो यह सृजन समष्टि को समष्टित हुआ है। मैं शारेदे के आशीष से जो सुर मिलत, तभी तो करे पन्नी पर यह भाव खिला। यह तुलिका महान स्याही का रूप नहीं, यह तो बहता हुआ अस्थि-मजजा-रक्त है। इसी ने दामिनी की चीख को पन्नी पर उतारा, यही किन्नर और वेण्या के दर्द का भवत है। कवि ने पात्र के हृदय को गहल है से निजा, उसके दुखों की परिधान बनकर खुद पढन लिया। तड़प को महसूस कर जब भावों को परिग्या, तब जाकर कहीं इन शब्दों ने आकार लिया। समाज से ही तो शक्य और संवेदनएँ पाई, फिर शब्दों का आवरण पतनकर यह भूलत बनाई। वह खुद हर दर्द की भुक्तमोगी नहीं होती, संवेदन और वेदना के गहरे सागर में डूबकर, आफकी ही अनकरी, अनुमन्यु भावनाओं को, उसकी कलम कागज पर मुकम्मल करती है। आप भी ऐसे सफ सुंदर आवरण बना लें, इसे ओढ़कर, इसकी रूह को महसूस कर लें। रचना का इस तरह निर्माण पोस्टमॉडर्न न करें, कवि का मन दुबलत है, रूह में निरहन होती है! डॉ सविता सिंह 'मीरा' जमशेदपुर